शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

भारतीय सिनेमा में प्रतिबिंबित गाँधीवादी समाज

- रामशंकर

शोधार्थी, म०गा०अं०हि० वि०वि०, वर्धा, महाराष्ट्र

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

भारतीय सिनेमा में प्रतिबिंबित गाँधीवादी समाज

- रामशंकर

महात्मा गाँधी के व्यक्तित्व एवं विचारों का प्रभाव राजनीति से इतर अन्य क्षेत्रों पर भी पड़ा। सिनेमा इससे अछूता रहे, यह असंभव है। यह शोध अध्ययन भारतीय सिनेमा के सेल्यूलाइड पर अंकित महात्मागाँधी की छवियों और उनके प्रभाव को अन्वेषित करने का प्रयास है।

विषय संकेत:- **भारतीय सिनेमा, गाँधीवाद, सिनेमा और समाज, फिल्म समीक्षा**

स्वतंत्रता-पूर्व के भारतीय इतिहास में गाँधी जी का उदय और फिल्म निर्माण का प्रारंभ प्राय: एक साथ ही हुआ। दादा साहब फालके ने भारत का पहला चलचित्र 'राजा हरिश्चंद्र' सन 1913 में बनाया था और उसी के आस-पास गाँधी जी भी दक्षिण अफ्रीका से भारत वापस लौटे थे। आठ वर्ष के अंदर ही यहाँ के फिल्म उद्योग के विकास पर स्थायित्व की मुहर लग गई। उसी समय यानी सन् 1921 में गाँधी जी का भी यहाँ की राजनीति में हस्तक्षेप बढ़ गया था, और उन्होनें अपना पहला सत्याग्रह आंदोलन चलाया। सन् 1930 में जब गाँधी जी ने अपने दूसरे आंदोलन की शुरुआत की, तब यहाँ सवाक् चित्रों का प्रादुर्भाव हुआ और पाँचवें दशक में जब वह 'क्विट इंडिया' का नारा बुलंद कर रहे थे, उस समय झाँसी की रानी जैसी फिल्मों के माध्यम से यहाँ के चित्रपट का पर्दा रंगीन होना प्रारंभ हो गया था। इस तरह हम देखते हैं कि भारत में गाँधी जी और फिल्म उद्योग के विकास का इतिहास साथ-साथ चला। यहाँ एक दूसरे के अंतर्प्रभावों का अध्ययन रोचक हो सकता है।

महात्मा गाँधी मानव-मूल्यों पर स्थापित एक ऐसे समाज का स्वरूप निर्धारण करना चाहते थे, जिस समाज में किसी व्यक्ति के साथ जाति, धर्म, भाषा और नस्ल के आधार पर भेदभाव नहीं होगा। उन्होंने अपने जीवन को सत्य का प्रयोग कहा, सत्य का साधक कहा। स्वयं को सत्याग्रही कहा। उनका व्यक्तित्व और जीवन ही एक संदेश था। उन्होंने सत्याग्रह बोला भी, पढ़ा भी, लिखा भी, जीवन में व्यवहृत भी किया तथा उसे समाज से जोड़कर प्रतिस्थापित भी किया। यही वजह है कि महात्मा गाँधी का पूरा व्यक्तित्व पूर्णतया सामाजिक है। उनके जीवन में व्यक्तिगत एवं सामाजिक जीवन का भेद पूर्णतया विलुप्त दिखता है।

महात्मा गाँधी का संपूर्ण जीवन ही एक सिनेमा था यह कहें तो अतिशयोक्ति न होगी। यही कारण है कि उनके जीवन पर अनेकों फिल्में बनीं। सिनेमा समाज से संवाद का सबसे सशक्त माध्यम है। सिनेमा से जुड़े रमेश तलवार कहते हैं कि "सिनेमा का अस्तित्व ही समाज को केंद्र में रखकर हुआ है। साहित्य पढता हूँ तो सिनेमा दिखता है, कथा पढ़ता हूँ तो सिनेमा दिखता है।"[1] यदि हम जनसंचार के सारे माध्यमों से सूचनाओं की बात करें तो सिनेमा, जनसंवाद तथा मनोरंजन का सबसे बड़ा माध्यम है। महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा में आयोजित 'हिंदी का दूसरा समय' में 'हिंदी का मुख्यधारा सिनेमा' विषय में सिनेमा में लेखन से जुड़े कमलेश पाण्डेय कहते हैं कि कमाई ही फिल्म की सफलता का पैमाना नहीं है, किंतु पैसा भी फिल्म के लिए नितांत जरूरी है। सिनेमा मनोरंजन का साधन न होकर जनता को जोड़ने का, जनता से जुड़ने का तथा जनता पर हावी होने का माध्यम बन चुका है।

डॉ0 विजय अग्रवाल अपनी पुस्तक 'सिनेमा और समाज' में लिखते हैं कि मैंने सन् 1970 में एक फिल्म देखी थी 'लाखों में एक', जिसका नायक महमूद था। जिस समय मैंने यह फिल्म देखी थी, उस समय तक मैं विद्यालय की पढ़ाई छोड़ चुका था। इस फिल्म का नायक महमूद लोगों के घरों में नौकर की तरह काम करता हुआ अपनी पढ़ाई पूरी करता है। मुझे भी लगा कि मैं भी अपनी पढ़ाई जारी रख सकता हूँ और मैंने स्वाध्यायी छात्र के रूप में अपनी पढ़ाई शुरू कर दी। आज जब मैं सोचता हूँ तो लगता है कि यदि महमूद जैसे हास्य कलाकार की फिल्म का मेरे जीवन पर गहरा पड़ा तो अन्य किरदारों का प्रभाव कितना पड़

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

भारतीय सिनेमा में प्रतिबिंबित गाँधीवादी समाज

- रामशंकर

शोधार्थी, म०गा०अं०हि० वि०वि०, वर्धा, महाराष्ट्र

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

सकता है। ब्रह्मचारी शिवानंद की पुस्तक 'ब्रह्मचर्य ही जीवन है' में बालमन पर फिल्मों के दुष्प्रभाव का वर्णन किया है कि किस प्रकार एक फिल्म को देखकर पांच बच्चों ने चोरी की।

जनमाध्यमों सामाजिक सरोकारों से महात्मा गाँधी पूर्णतया परिचित थे। महात्मा गाँधी ने अपने बाल्यावस्था में श्रवण पितृभक्ति तथा सत्य हरिश्चंद्र नाटक देखा था। सत्य हरिश्चंद्र नाटक के संबंध में गाँधी जी ने अपनी पुस्तक 'सत्य के प्रयोग या आत्मकथा' में लिखा है कि "बार-बार सत्य हरिश्चंद्र नाटक देखना चाहता था लेकिन यों ही मुझे बार-बार जाने कौन देता? पर मैंने उस नाटक को सैकड़ों बार खेला होगा। मुझे हरिश्चद्र के सपने आते हैं। हरिश्चंद्र की तरह सत्यवादी सब क्यों नहीं होते हैं, जिन्होंने अपने को क्या स्वयं के परिवार को भी सत्य के लिए बेच डाला।"[2]

महात्मा गाँधी ने साहित्य एवं कला के संबंध में कहा है कि 'जिस कला के पीछे प्राणियों पर जुल्म, उनकी हिंसा, उत्पीड़न आदि हो, उसमें बाह्य सौंदर्य कितना भी हो, तो भी वह कला, कलि अथवा शैतान का ही दूसरा नाम है। जो कला मनुष्य की हीन वृत्तियों को उभारती और भोगों की इच्छा को बढ़ाती है, वह कला गंदे साहित्य की श्रेणी में ही समझी जाएगी।' महात्मा गाँधी द्वारा साहित्य एवं कला संबंधी विचार यह दर्शातें हैं कि मनुष्य को सत्य साहित्य तथा कला का ही दर्शन-अध्ययन करना चाहिए, क्योंकि गलत साहित्य तथा कला द्वारा 'सत्यं शिवं सुंदरम्' की स्थापना संभव नहीं है। उसके द्वारा समाज में मानवीय दुर्बलताओं का ही प्रचार-प्रसार होगा। भारतीय सिनेमा को हम स्वतंत्रता पूर्व तथा स्वतंत्रता पश्चात् के कालखण्डों में बाँट सकते हैं। स्वतंत्रता पूर्व के सिनेमा पर महात्मा गाँधी के प्रभाव को देखा जा सकता है।

भारत में सिनेमा का प्रारंभ 19वीं शताब्दी के समापन के साथ ही हो गया था। राष्ट्रीय आंदोलन के समय में सिनेमा या चलचित्र पूर्ण रूपेण गाँधी और राष्ट्रीय आंदोलन से प्रभावित रहा है। उस समय के सिनेमा में विदेशी शासन से संघर्ष करते किरदार प्रत्यक्ष नहीं दिखाये जा सकते थे, किन्तु राष्ट्रीय भावनावों की अभिव्यक्ति अप्रत्यक्ष ही हो सकती थी। सन् 1921 में राष्ट्रीय आंदोलन तथा महात्मा गाँधी से प्रभावित फिल्म 'भक्त विदुर' फिल्म का पात्र महात्मा गाँधी से मेल खाता था, सरकार ने इस पर प्रतिबंध लगा दिया। फिर वंदेमातरम् आश्रम फिल्म सन् 1927 में आयी। वह फिल्म सरकारी शिक्षा तंत्र को दर्शाती थी, सरकार ने उस पर भी प्रतिबंध लगा दिया। सन् 1936 में नितिन बोस के निर्देशन में फिल्म 'धरती माँ' बनी। उस समय साउंड का आगमन हो चुका था धरती माँ में राष्ट्रीय एकता का चित्रण हुआ। सरकार ने फिर अवरोध उपस्थित किया। 1938 में एक फिल्म आयी इसमें गाँधी, नेहरू तथा चरखा का चित्रण हुआ था। महात्मा गाँधी द्वारा प्रतिपादित आंदोलन ने भारतीय जनमानस को झकझोर दिया था, इसकी छवि उस समय की फिल्मों पर साफ देखा जा सकती है।

गाँधी जी की हत्या तथा भारत विभाजन के पश्चात आयी फिल्म 'गर्म हवा' में दो समुदायों के विद्वेष को दर्शाया गया था तथा फिल्म में प्रश्न उठाया कि भारत विभाजन तथा धर्मांधता जैसे तत्व भारतीय एकता के लिए साक्षात् विष वृक्ष हैं। 1931 में फिल्म 'स्वराज' में अंग्रेजी राज तथा हिंद स्वराज्य पर ध्यान केंद्रित किया गया है। देश की आजादी के बाद के फिल्मों में राष्ट्रभक्ति प्रमुख विषय रहा है। प्रसिद्ध फिल्म निर्माता, निर्देशक तथा अभिनेता मनोज कुमार ने 'उपकार', 'पूरब और पश्चिम', तथा 'रोटी कपड़ा और मकान' में देशभक्तिपरक गीत तथा देशभक्त नायक का चित्रण किया। इन फिल्मों में नायक राष्ट्रीय एकता सांप्रदायिक सौहार्द हेतु लड़ता तथा संघर्ष करता है। प्रत्येक फिल्म में नायक भारत[3] है जो मनोज कुमार को भारत कुमार के रूप में प्रसिद्धि दिलाता है। चेतन आनंद की फिल्म 'हकीकत', 'एल.ओ.सी', 'बार्डर' तथा 'लक्ष्य' ने राष्ट्रीय आंदोलन में महात्मा गाँधी के योगदान पर जोर दिया है।

कालान्तर में सेक्स, हिंसा के मनोविज्ञान ने निर्माताओं-निर्देशकों को अपनी और खींचा। डॉलरीकृत तथा पौंडीकृत अर्थव्यवस्था ने गाँधी की ओर देखा कि क्या गाँधी बिक सकते है? उसने गाँधी जी की प्रासंगिकता पर नए सिरे से जोर दिया। सर रिचर्ड एटनबरों ने 'गाँधी', श्याम बेनेगल ने 'द मेकिंग आफ महात्मा,' अनुपम खेर ने 'मैंने गाँधी को नहीं मारा' तथा राजकुमार हीरानी ने भी 'लगे रहो मुन्ना भाई' के माध्यम से महात्मा की गाँधी विभिन्न संदर्भों में नई छवियाँ दी।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

भारतीय सिनेमा में प्रतिबिंबित गाँधीवादी समाज

- रामशंकर

शोधार्थी, म०गा०अं०हि० वि०वि०, वर्धा, महाराष्ट्र

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

सन् 1966 में बनी फिल्म 'द मेकिंग आफ महात्मा'[4] में गाँधी दक्षिण अफ्रीका में मुकदमा लड़ने जाते है। वहाँ वह भारतीयों व अन्य एशियाई नागरिकों के साथ नस्लीय भेद व जातीय भेदभाव को देखकर द्रवित हो जाते हैं, वही से शुरु होता है प्रथम सत्याग्रह तथा पत्रकारिता का अस्त्र। गाँधी भारतीयों व मूल अफ्रीकियों के संघर्ष में सहभागिता के लिए डरबन में भी जाकर सत्याग्रह का बिगुल फूँकते हैं तथा वहाँ से 'द मेकिंग ऑफ द महात्मा' बनकर ब्रिटिश दासता से मुक्ति के लिए भारत में आंदोलन करते हैं।

रिचर्ड एटनबरो द्वारा निर्देशित व निर्मित फिल्म 'गाँधी' सन् 1982 में बनी। यह फिल्म मोहन दास करमचंद गाँधी के जीवन पर केंद्रित थी जिसमें महात्मा गाँधी एक भारतीय वकील, एक आंदोलनकारी तथा एक राष्ट्रीय नेता के रूप में दर्शाए गए हैं। इस फिल्म में असहयोग आंदोलन, सत्याग्रह तथा अन्य गाँधीवादी साधनों का यथासंभव सजीव चित्रण किया गया है। इसमें बेन किंग्सले ने गाँधी की भूमिका निभायी है। ग्यारह श्रेणियों में अकादमी पुरस्कार, आठ पुरस्कार प्राप्त कर यह श्रेष्ठ सिनेमा घोषित हुआ। इसमें किंग्सले को श्रेष्ठनायक का पुरस्कार मिला।

महात्मा गाँधी तथा नाथूराम गोडसे को लेकर 1989 में प्रदीप दलवी द्वारा निर्मित/निर्देशित नाटक 'मी नाथूराम गोडसे बोलतोय' को महाराष्ट्र शासन ने प्रतिबंधित कर दिया। नाटक की शुरूआत दर्शकों के पीछे से होती है। नाथूराम गोडसे दर्शकों में से या इधर-उधर कुछ ढूंढ रहे हैं। एकाएक वे दर्शकों को दिखायी देते हैं। दर्शकों के बीच वे कुछ प्रश्न खड़ा करते हैं कि मेरे बारे में जो कुछ भी बताया जाता है, वह केवल गलत है। सरकारी इतिहास में मुझे हिन्दू अतिवादी के रूप में पढ़ाया जाता है। नायक नाथूराम दर्शकों से पूछता है। ''कौन नाथूराम है? हमारे घर क्यों उनको लेकर जला दिए गए, आप में से कुछ ने मेरे द्वारा तथा नाना आप्टे द्वारा निकलने वाली 'अग्रणी' को पढ़ी व देखी होगी। लेकिन आपने 30 जनवरी, 1948 के बाद मुझे दरकिनार कर दिया। आप जानते हो मैं कैसे बूढ़ा हो गया हूँ, मैं 1990 में 88 वर्षों का हो गया हूँ, क्या आप सोचते हो? मेरे नवयौवन का रहस्य मेरी मृत्यु है। मैं 19 मई, 1910 को पैदा हुआ। मेरे पिता पोस्टल सेवा में थे, तथा माँ का नाम लक्ष्मी था। मेरा जीवन ठीक-ठाक ढंग से चल रहा था, लेकिन मैंने शरणार्थियों के कैंप को देखा। वे भोजन, वस्त्र और आवासहीन होकर तड़प रहे थे। मैने देखा कि तड़पते, बिलखते और असहायों के ऊपर दु:ख देने वाला मात्र गाँधी ही था। इसके साथ ही 55 करोड़ रूपये की बात को नाथूराम गोडसे ने उठाया है। 13 जनवरी, 1948 को गाँधी ने 55 करोड़ देने के लिए उपवास शुरू किया तथा उसी तारीख को सरकार ने उक्त फैसले को स्वीकार कर लिया। तब मैंने गाँधी वध का फैसला कर लिया।"[5]

जहनु बरुआ द्वारा निर्देशित तथा अनुपम खेर द्वारा निर्मित फिल्म 'मैने गाँधी को नहीं मारा'[6] के लेखक जहनु बरूआ तथा संजय चौहान थे। इस फिल्म के मुख्य कलाकारों में अनुपम खेर तथा उर्मिला मातोंडकर थी। उत्तम चौधरी अवकाश प्राप्त हिन्दी के प्रोफेसर हैं तथा वे डीमेंसिया रोग से पीड़ित हैं। उत्तम चौधरी को विश्वास है कि उसने ही राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी की हत्या की, और वह गन खिलौना न होकर सही गन था, जब उत्तम के पिता उसे मारते हैं तो वह कहता है कि मैने गाँधी को नहीं मारा। उत्तम चौधरी को लगता है कि हत्या में उसका घर ही जेल बनाया जा सकता है तथा भोजन में विष मिलाया जा सकता है। क्योंकि उसने ही गाँधी को मारा है। पहले डाक्टर के खाने पर ही उत्तम चौधरी को विषरहित भोजन का एहसास होता है। उत्तम चौधरी कोर्ट में है तथा गन एक्सपर्ट जाँच द्वारा यह बताता है कि खिलौने की गन के द्वारा किसी की हत्या नहीं की जा सकती।

फिल्म 'गाँधी टू हिटलर'[7] दो विरोधी विचारधाराओं पर केन्द्रित है। लेखक, निर्देशक का यह कदम सराहने योग्य है कि उन्होनें गाँधी और हिटलर को आमने-सामने रखकर यह दर्शाने की कोशिश भी की है कि वे युद्ध तथा हिंसा के मार्ग को छोड़कर शांति और अहिंसा के मार्ग को अपनाएँ। अपने अंतिम समय में हिटलर एकाकी जीवन की ओर अग्रसर हो रहे हैं तथा गाँधी भी अपने सहयोगियों से दु:खी एवं उदास हैं तथा उनकी हत्या हो जाती है। हिटलर और गाँधी के मतभेदों को बहुत ही खूबसूरती से पर्दे पर दिखाया गया है और एक बार फिर से बापू के रूप में सत्य और अहिंसा की जीत हुई है। हालांकि फिल्म गाँधी पर नहीं बल्कि हिटलर पर है।

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research

मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

भारतीय सिनेमा में प्रतिबिंबित गाँधीवादी समाज

- रामशंकर

शोधार्थी, म०गा०अं०हि० वि०वि०, वर्धा, महाराष्ट्र

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

'गाँधी, माई फादर' फिरोज अब्बास खान द्वारा निर्देशित हिंदी फिल्म है। 'गाँधी, माई फादर' कहानी है, गाँधी जी (दर्शन जरीवाला) और उनके बेटे हरिलाल गाँधी (अक्षय खन्ना) के रिश्ते की। दोनों के सपने अलग अलग हैं और दोनों की सोच अलग है। हरिलाल का सपना विदेश में पढ़ने का है और अपने पिताजी की तरह बैरिस्टर बनने का, लेकिन गाँधीजी चाहते हैं कि उनका बेटा उनके साथ, उनके सिद्धांतों पर चले। जब गाँधी जी हरिलाल को विदेश पढ़ाई के लिए नहीं जाने देते हैं तो हरिलाल अपने पिता से अलग होकर अपनी पत्नी गुलाब (भूमिका चावला) और बच्चों के साथ चला जाता है। हरिलाल वापस अपने देश जाकर अपनी पढ़ाई पूरी करने का फैसला करता है लेकिन तीन बार असफल होने पर वह निराश हो जाता है। बार-बार शराब पीकर देर रात लौटने से निराश होकर गुलाब अपने बच्चों के साथ अपने पिता के घर चली जाती है। यहाँ पर निर्देशक ने समाज और महिलाओं के सामाजिक दर्द को प्रतिरूपित करने का प्रयास किया है। असफल और निराश हरिलाल दु:खी होकर शराब के नशे में रहने लगता है। यह कहानी है उस इन्सान की जो अपने पिता की छाँव में अपनी पहचान बनाने की कोशिश में असफल हुआ। फिल्म में समाज को चित्रित किया गया है। गाँधी जी बार-बार अपने बेटे को समाज की भलाई करने की बात पर ज़ोर देते रहे।

निष्कर्ष-

'कलाएँ समाज से जन्म लेती हैं, और अंतत: समाज को प्रभावित करती है। हिन्दी सिनेमा इस बात का अपवाद नहीं है, हिंदी फिल्मों के इतिहास में समाज सें होते हुए सांस्कृतिक परिवर्तनों को सहेजा जा सकता है। यह बात अलग है कि ये परिवर्तन फिल्मों में ज्यों के त्यों नहीं आए।'8 फिल्मों के निर्माण पर गाँधी-विचारधारा का प्रभाव स्वाभाविक ही था। कला और संस्कृति का देश की राजनीतिक परिस्थितियों के साथ ही साथ सामाज से अत्यंत अटूट संबंध है, और गाँधी जी का प्रभाव जब हमारी कविता, कहानी, उपन्यास और नाटकों की विधाओं पर पड़ा तो फिल्म कला उससे अछूती कैसे रह सकती थी? देश के फिल्म निर्माण का प्रारंभिक इतिहास देखने से पता चलता है कि उस पर गाँधीवाद का व्यापक प्रभाव पड़ा था और उस कालखण्ड में प्रदर्शित कम से कम आधा दर्जन ऐसे चित्रपटों के नाम आसानी से लिए जा सकते हैं जिन पर गाँधी जी और उनके आदर्शों की स्पष्ट छाप थी।

वर्तमान समय में महात्मा गाँधी को सिनेमा से जोड़ने की जरूरत है। ऐसा सिनेमा जो मानवीय मूल्यों से ओतप्रोत हो। लेकिन सिनेमा जगत क्या गाँधी जी के सिद्धांतो पर चल रहा है? क्या सिनेमा गाँधी जी के मूल्यों एवं सिद्धांतों का निर्वहन कर रहा है? कोई भी व्यक्ति होगा तो वह यही कहेगा कि जिस प्रकार राजनीतिज्ञ, पत्रकार, शिक्षाविद, उद्योगपति, विद्यार्थी और समाज सेवी, बार-बार गाँधीवाद की हत्या कर रहे हैं, ठीक उसी प्रकार सिनेमा भी कर रहा है। जयप्रकाश चौकसे का यह कहना हैं कि आज सिनेमा गाँधी जी के मूल्यों एवं सिद्धांतों का निर्वहन कर रहा है, यह सौ प्रतिशत गलत है। यदि गीतकार, पटकथा लेखक, निर्माता तथा निर्देशक गाँधी के रास्ते से चलकर फिल्म का निर्माण करते तो 'जिस्म', 'सात खून माफ', 'राज-2', कहानी', 'शंघाई', 'मर्डर', 'हिरोइन' तथा डर्टी पिक्चर' जैसी फिल्में नहीं बनतीं। भारतीय समाज में मूल्यों की स्थापना के लिए सिनेमा कर्मियों को मिल-बैठकर विचार करना होगा कि इस प्रकार की हम फिल्म बनाएँ जिससे युवाओं और समाज में हाशिए पर ठेल दिये गए लोगों में सकारात्मक विचारों का प्रचार-प्रसार हो और गाँधीवादी समाज हकीकत में बदल सके तथा गाँधी के सपनों का भारत का स्वप्न साकार हो

संदर्भ:-

1- http://dainiktribuneonline.com/2011/04/अब-लोग-मुझे-पाहचाननें-लगे-हैं/
2- अनुवादक काशिनाथ 'सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा" पृश्ठ - 5
3- अग्रवाल डॉ0, 'विजय सिनेमा और समाज,' सत्साहित्य प्रकाशन, दिल्ली संस्करण-1993
4- फिल्म 'द मेकिंग आफ महात्मा' निर्देशन-श्याम बेनेगल, साहित्य प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 1993
5- http://www.marathipicture.blogspot.in/2009/03/blog-post.html
6- http://www.hindi.oneindia.in/movies-bollywood/review/2011/07

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

An Internationally Indexed Refereed Research Journal & A complete Periodical dedicated to Humanities & Social Science Research
मानविकी एवं समाज विज्ञान के मौलिक एवं अंतरानुशासनात्मक शोध पर केन्द्रित

Half Yearly

Vol-4, Issue-2
15 July, 2013

भारतीय सिनेमा में प्रतिबिंबित गाँधीवादी समाज

- रामशंकर

शोधार्थी, म०गा०अं०हि० वि०वि०, वर्धा, महाराष्ट्र

www.shodh.net

Web Portal of Humanity & Social Science Research

7- http://www.hindi.oneindia.in/movies-bollywood/review-gandhi-hitler-is-nice-film-aid0092.html

8- डॉ. अग्रवाल, विजय 'सिनेमा और समाज' पृष्ठ-11

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN